ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-1* February- 2019
Innovation The Research Concept

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शिक्षण कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन

प्रतिभा पाण्डेय
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
एम0एड0 विभाग,
अभिनव सेवा संस्थान महाविद्यालय,
कानपुर

सारांश

यह निर्विवाद सत्य है कि शिक्षा मानव जीवन का सबसे आवश्यक संस्कार, सामाजिक परिवर्तन का आधार और आर्थिक उन्नति का एक सशक्त साधन है। शिक्षा ही वह संस्कार है जो व्यक्तियों को भिन्नता के आधार पर भी योग्य बनाती है। सर्व प्रथम सन् 1982 में दादा भाई नैरोजी ने भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन) के सामने प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य बनाने की मांग रखी थी।

मुख्य शब्द : प्राथमिक विद्यालय।

प्रस्तावना

आजादी के पश्चात 1948 में शिक्षा को सही दिशा देने के लिये पहला शिक्षा आयोग सर्वपल्ली राधाकृष्णन के नेतृत्व में गठित किया गया। इसके बाद सी0ए0वी0ए0 शिक्षा समिति 1949, लक्ष्मण स्वामी मुरलीधर शिक्षा आयोग 1952, रामचन्द्रन शिक्षा– समिति 1956, बुनियादी शिक्षा समिति 1963, हंसा मेहता शिक्षा समिति 1962–64, कोठारी शिक्षा आयोग 1964–66, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, चट्टोपाध्याय आयोग 1985, रामचर्य मूर्ति शिक्षा समिति 1990, जनार्दन रेड्डी शिक्षा समिति 1992, प्रो0 यशपाल शिक्षा समिति 1993 जैसे अनेक शिक्षा आयोगों/ समितियों का गठन किया गया। इनके द्वारा की गयी संस्तुतियों की रिपोर्ट लागू भी नहीं की गयी कि दूसरे का गठन कर दिया गया। केन्द्र सरकार देश में 6–14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के लिये 86वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2001 में पास किया। जिससे यह अधिकार मौलिक अधिकारों में शामिल हो गया ।

उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा का प्राथमिक स्तर एक बुनियादी स्तर के रूप में कार्य करता है। अतः आवश्यक है कि इस स्तर से सम्बन्धित ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की समस्याओं, क्षमताओं, योग्यताओं तथा गुणों पर विशेष ध्यान दिया जाये।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आज युवक–युवतियाँ अन्तिम विकल्प के रूप में शिक्षण व्यवस्था चुनते हैं। ऐसी दशा में काफी संख्या में ऐसे व्यक्ति शिक्षक बन जाते हैं जिनमें न तो शिक्षण अभिक्षमता होती है औन न ही अभिवृत्ति। उपरोक्त कमियों से शिक्षण कार्य प्रभावित हो रहा है। ग्रामीण और शहरी दोनों शिक्षकों में प्रायः कमियाँ देखने को मिल रही है। इन्ही सबको देखते हुये ग्रामीण और शहरी शिक्षकों में किसके द्वारा अध्यापन कार्य अधिक कुशलता के साथ संचालित किया जा रहा है इसके अध्ययन की आवश्यकता हुयी।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध में समस्या को निम्न रूप में भाषा बद्ध किया गया है–

''प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शिक्षण कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध प्रबन्ध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शिक्षण सम्बन्धी कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के विद्यालयी सम्बन्धी कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शिक्षण विधियों के प्रयोग सम्बन्धी कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों द्वारा परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन करने की कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया है–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शिक्षण कुशलता में कोई अन्तर नहीं होगा।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के विद्यालयी सम्बन्धी कुशलता में कोई अन्तर नहीं होगा।
3. ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शिक्षण विधियों में प्रयोग सम्बन्धी कुशलता में कोई अन्तर नहीं होगा।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों द्वारा छात्रों के परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन सम्बन्धी कुशलता में कोई अन्तर नहीं होगा।

सीमांकन

कोई भी शोध कार्य बिना पूर्व निश्चित आकार के पूर्ण करना सम्भव नहीं होता है। समय व परिस्थितियों को सामने रखकर प्रत्येक शोध की एक सीमा तय करनी पडती है क्योंकि किसी भी विषय पर शोध एक व्यापकता के लिये होता है। इसी बात को ध्यान में रखकर शोधकर्ती ने अपने शोध कार्य में ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 50 शिक्षकों को और शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 50 शिक्षकों को शोध अध्ययन के लिये लिया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त अनुसन्धान विधि

शोध कार्य में विधि का बडा महत्व होता है और विधि का निर्धारण शोध के उद्देश्यों पर निर्भर करता है जबकि शोध के द्वारा वर्तमान स्थिति, विकास एवं प्रभाव को देखा जाता है तब सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है, प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत शोधकर्ती द्वारा यादृच्छिक न्यादर्श विधि के माध्यम से कानपुर जनपद के शहरी क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र के अध्ययनरत् शिक्षकों के शिक्षण कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये 50 शहरी क्षेत्र के शिक्षक और 50 ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों को न्यादर्श के अन्तर्गत लिया गया।

शोध के उपकरण :– प्रस्तुत शोधकार्यों में उपकरण के रूप में प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली व्यवहारपरक शोधों में आँकडे संग्रह करने एवं शोध समस्याओं का अध्ययन करने का काफी प्रचलित एवं लोकप्रिय साधन है।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

प्रस्तुत अध्ययन में गणना के लिये प्रयुक्त सांख्यकीय विधि मध्यमान (M) , मानक विचलन (S.D.), तथा क्रांतिक अनुपात (C.R.) का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका नं0–1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शिक्षण कुशलता से सम्बन्धित सारणी–

समूह	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (σ)	टी–अनुपात या C.R.	सार्थकता स्तर	परिकल्पना
ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक	23.16	1.48	0.64	असार्थक	स्वीकृत
शहरी क्षेत्र के शिक्षक	23.86	1.98			

उपर्युक्त सारणी के अनुसार मान 0.05 तथा 0. 01 सार्थकतास्तर के मान 1.98 तथा 2.63 दोनों से कम है। अतः यह दोनों स्तरों पर सार्थक नहीं है। इस आधार पर शोधकर्ती द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना ''प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शिक्षण कुशलता में कोई अन्तर नहीं होगा'' स्वीकृत की जाती है।

तालिका नं0–2

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के विद्यालयी कुशलता से सम्बन्धित सारणी–

समूह	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (σ)	टी–अनुपात या C.R.	सार्थकता स्तर	परिकल्पना
ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक	5.50	3.34	0.10	असार्थक	स्वीकृत
शहरी क्षेत्र के शिक्षक	5.40	3.44			

उपर्युक्त सारणी के अनुसार चूंकि ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के विद्यालयी कुशलता के मध्यमानों का अन्तर 0.10 है। जो कि सार्थक अन्तर है या नहीं यह ज्ञात करने के लिये (C.R.) की गणना की जो 0.10 ज्ञात हुयी है। यह मान 0.50 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 2.63 से कम है। अतः यह दोनों स्तरों पर सार्थक नहीं है।

इस आधार पर शोधकर्ती द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना ''प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शिक्षण कुशलता में कोई अन्तर नहीं होगा'' स्वीकृत की जाती है।

तालिका नं0–3

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शिक्षण विधियों के प्रयोग की कुशलता से सम्बन्धित सारणी–

समूह	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (σ)	टी–अनुपात या C.R.	सार्थकता स्तर	परिकल्पना
ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक	5.46	4.74	0.55	असार्थक	स्वीकृत
शहरी क्षेत्र के शिक्षक	5.84	0.86			

उपर्यक्त सारणी के अनुसार यह अन्तर सार्थक अन्तर है या नहीं को ज्ञात करने के लिये 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का प्रयोग किया गया जिसका मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 है। जबकि उपरोक्त तालिका में क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 0.55 आया है। जोकि 1.98 तथा 2.63 से बहुत ही कम है। अतः दोनों स्तरों पर सार्थक नहीं है। इसलिए परिकल्पना नं0–3 स्वीकृत की जाती है।

तालिका नं0–4

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन से सम्बन्धित सारणी–

समूह	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (σ)	टी–अनुपात या C.R.	सार्थकता स्तर	परिकल्पना
ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक	0.13	1.80	0.12	असार्थक	स्वीकृत
शहरी क्षेत्र के शिक्षक	0.16	1.2			

उपर्युक्त सारणी के अनुसार यह अन्तर सार्थक अन्तर है या नहीं को ज्ञात करने के लिये 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का प्रयोग किया गया जिसका मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 है। जबकि उपरोक्त तालिका में क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 0.10 आया है। जो कि 1.98 तथा 2.63 से बहुत ही कम है। अतः दोनों स्तरों पर सार्थक नहीं है असार्थक है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन में कोई सार्थक अन्तर न होने के कारण यह हमारी उपपरिकल्पना स्वीकृत होती है।

प्रस्तुत शोध निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों का विद्यालयी कुशलता, शिक्षण कुशलता, शिक्षण विधियों के प्रयोग की कुशलता तथा परीक्षा के संचालन तथा मूल्यांकन में समान रूप से सक्रिय है।

शैक्षिक शोध की उपयोगिता

इस प्रकार स्पष्ट है कि शोधकर्ती द्वारा प्रस्तुत शोध शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने एवं शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाये जाने के साथ शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विकास हेतु प्रेरणा के रूप में उपयोगी है।

भावी शोध हेतु सुझाव

इसके अतिरिक्त भावी शोध हेतु सुझाव से सम्बन्धित निम्न कार्य किया जा सकता है–

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की कुशलता का अध्ययन किया जा सकता है।
2. ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं की शिक्षण कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन।

सन्दर्भ गृन्थ सूची

1. *दूबे एस0एन0 (1998–99) – शिक्षण का विज्ञान तथा तकनीकी साहित्य प्रकाशन आगरा–3, द्वितीय संस्करण*
2. *लाल रमन बिहारी – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ*
3. *सिंह, अरूण कुमार (2012) – मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली, मोतीलाल दास प्रकाशन, संस्करण दसवाँ*
4. *सिंह, प्रभात कुमार – जनसंख्या एवं नगरीकरण, इलाहाबाद कम्पिटीसन स्पेक्ट्रम*